विचार बिन्दु

शास्त्र पढ़कर भी लोग मूर्ख होते हैं, किन्तु जो उसके अनुसार आचरण करता है वो ही वस्तुतः विद्वान है। –अज्ञात

सुविधा की कीमत: कितनी हानि कितना लाभ?

हम जैसे लोग, जिन्होंने अपने परिवेश को तेजी से बदलते देखा है, आज के जीवन की सुगमता को देखकर आश्चर्यचकित हैं। यह सुगमता खासतौर पर उन लोगों के लिए उल्लेखनीय है, जिन्होंने समय के साथ कदम मिलाने का प्रयास किया। लेकिन क्या यह सुगमता वास्तव में उतनी ही लाभकारी है, जितनी दिखाई देती है? इसे हासिल करने की कीमत क्या है? क्या हमने सुविधा के बदले में कुछ अनमोल खो दिया है? आइए, पहले देखें कि तकनीक ने हमारा जीवन कैसे आसान बनाया है, और फिर विचार करें कि इसकी लागत कितनी भारी है–सामाजिक, आर्थिक, और मनोवैज्ञानिक स्तर पर।

बात ज्यादा पुरानी नहीं, जब मोहल्ले में किसी एक घर में टेलीफोन होना विशेष बात थी। उस घर को 'टेलीफोन वाले' के रूप में जाना जाता था। टेलीफोन का तार लोहे के एंगल तक खींचा जाता, और पड़ोसी बिना पूछे उसका नंबर अपने जान-पहचान वालों को दे दिया करते। इसे पीपी नंबर कहते थे। मुझे याद है, जब मेरे एक पड़ोसी के घर में टेलीफोन लगा, तो पूरा मोहल्ला उनके घर की ओर देखता था। बच्चे उत्साह में तार को छूने की कोशिश करते, और बड़ों की नजरें गर्व से चमकतीं। रेडियो भी कभी ऐसी ही हैसियत रखता था। छत पर एंटीना लगाना होता था जो दूर-दूर तक आपकी हैसियत को उजागर करता था। और डाक-तार विभाग से रेडियो सुनने के लिए लाइसेंस लेना अनिवार्य था। साइकिल चलाने के लिए भी नगरपालिका से टोकन खरीदना पड़ता था, जो उसकी नंबर प्लेट होता था। टेलीफोन कॉल्स एक्सचेंज के माध्यम से लगते थे, और टेलीफोन ऑपरेटर की कस्बों-शहरों में बड़ी प्रतिष्ठा थी। तार (टेलीग्राम) आना अक्सर बुरी खबर का संकेत था। तारवाला साइकिल पर आता, तो मोहल्ले की सांसें थम जातीं। बाद में बधाई के तार भी शुरू हुए, लेकिन उनकी गिनती कम थी।

बैंक में खाता होना भी बड़ी बात थी। पैसे निकालने के लिए चेक या निकासी पर्ची जमा कराना, टोकन लेना, और लंबी कतार में इंतजार करना एक छोटा-मोटा संठाम था। बिजली, पानी, या टेलीफोन का बिल जमा करने के लिए अलग-अलग कतारों में घंटों खड़ा होना पड़ता। मुझे याद है, एक बार बिजली बिल जमा करने की आखिरी तारीख थी, और मैं लाइन में देर तक खड़ा रहा, सिर्फ यह सुनने के लिए कि 'काउंटर बंद हो गया, कल आइए।' सिनेमा हॉल की टिकट खिड़की पर धक्का-मुक्की आज की मल्टीप्लेक्स पीढ़ी के लिए शायद अकल्पनीय हो। एक बार मैंने दोस्तों के साथ शोले देखने की ठानी, लेकिन टिकट खिड़की पर इतनी भीड़ थी कि हमें ब्लैक में टिकट खरीदना पड़ा। पत्र लिखना, लिफाफे में बंद करना, डाक टिकट लगाना, और डाकघर तक जाना-यह सब रोजमर्रा का हिस्सा था। लेकिन इन सबके बीच एक सामाजिकता थी, जो आज गायब है।

आज सब कुछ बदल गया है। हर हाथ में स्मार्टफोन है, जो रेडियो, कैमरा, रिकॉर्ड प्लेयर, कैलकुलेटर, घड़ी-सब कुछ बन गया है। यूपीआई ने वॉलेट और बैंक को हमारी जेब में ला दिया है। दुनिया के किसी भी कोने में तुरंत बात करना, वीडियो कॉल करना, टिकट बुक करना, या खरीदारी करना-सब कुछ घर बैठे संभव है। मल्टीप्लेक्स और ई-कॉमर्स ने सिनेमा और शॉपिंग के अनुभव को पूरी तरह बदल दिया है। उबर-ओला ने यात्रा को इतना आसान बना दिया कि अब रिक्शा बुलाने या चौराहे पर वाहन का इंतजार करने की जरूरत नहीं। रेल, हवाई जहाज, या सिनेमा का टिकट-सब कुछ एक क्लिक पर उपलब्ध है। पहले शहरों में किताबें ढूंढना मुश्किल था, लेकिन अब ई-कॉमर्स साइट्स अगले दिन किताबें घर पहुंचा देती हैं। मैं हर माह चार-पांच किताबें मंगवाता हूं, और ऑर्डर के अगले दिन वे मेरे हाथ में होती हैं। फोटो खींचने के बाद रील धुलवाने या प्रिंट करवाने की जरूरत खत्म हो गई। गाना सुनने के लिए कैसेट या सीडी खरीदने की आवश्यकता नहीं। बिल भुगतान, होटल रिजर्वेशन, पर्यटन स्थलों के टिकट-सब कुछ सुगम और त्वरित हो गया है। पहले घर से लंबी अनुपस्थिति में बिल जमा करने की चिंता सताती थी, लेकिन अब स्वचालित भुगतान ने इसे भी खत्म कर दिया। एक बार मैंने विदेश यात्रा के दौरान अपने मोबाइल से बिजली बिल भरा, और यह अनुभव मेरे लिए जादुई-सा था।

आज सब कुछ बदल गया है। हर हाथ में स्मार्टफोन है, जो रेडियो, कैमरा, रिकॉर्ड प्लेयर, कैलकुलेटर, घड़ी-सब कुछ बन गया है। यूपीआई ने वॉलेट और बैंक को हमारी जेब में ला दिया है। दुनिया के किसी भी कोने में तुरंत बात करना, वीडियो कॉल करना, टिकट बुक करना, या खरीदारी करना-सब कुछ घर बैठे संभव है।

यह सुगमता तकनीक को अपनाने का परिणाम है। मैं स्वीकार करता हूं कि तकनीक के प्रति मेरा उत्साह और सीखने की ललक ने मुझे इसका लाभ उठाने में मदद की। मेरे कई हमउम्र लोग इसे अपनाने में हिचकते हैं, और यह उनका व्यक्तिगत चुनाव है। मैं केवल अपनी बात कहना चाहता हूं। पहले मैं इन सुविधाओं का उत्साही प्रशंसक था, लेकिन अब मेरा दृष्टिकोण बदल गया है। मुझे लगता है कि इस सुगमता की कीमत हमें कई स्तरों पर चुकानी पड़ रही है।

पहला नुकसान है सामाजिकता का कम होना। पहले, बिल जमा करने या टिकट खरीदने की कतारों में अनजान लोगों से बातचीत होती थी। हंसी-मजाक, सुख-दुख की बातें, और छोटे-बड़े अनुभव साझा होते थे। एक बार कतार में खड़े एक बुजुर्ग ने मुझे बताया था कि कैसे सस्ते में यात्रा के टिकट बुक किए जा सकते हैं-यह जानकारी मेरे लिए अनमोल थी। एक अन्य बार, बैंक की लाइन में एक व्यक्ति से बातचीत में मुझे अपने शहर के किसी छिपे हुए पर्यटन स्थल के बारे में पता चला, जहां बाद में मैं परिवार के साथ गया। ये मुलाकातें थकान को भुला देती थीं और उपयोगी जानकारियां देती थीं। आज, स्क्रीन पर उंगलियों के इशारे ने इन मुलाकातों को लगभग खत्म कर दिया। हमारी सामाजिकता अब व्हाट्सएप ग्रुप्स और सोशल मीडिया तक सिमट गई है, जहां भावनाओं की गहराई गायब है।

दूसरा, तकनीक के पीछे पूंजी का बड़ा खेल है। ई-कॉमर्स साइट्स सस्ते दामों पर सामान बेचकर उपकार नहीं कर रही हैं। उनका लक्ष्य स्थानीय व्यवसायों-रिक्शा वालों, ऑटो चालकों, छोटे दुकानदारों, किराना व्यापारियों-को ख़त्म करना है। मेरे मोहल्ले का एक रिक्शा चालक, जो मेरे बच्चों को स्कूल छोड़ता था, अब मजदूरी करने को मजबूर है, क्योंकि उबर-ओला ने उसकी आजीविका छीन ली है। हमारे पड़ोस की किराना दुकान, जहां मैं बचपन में सामान लाने जाता था, अब बंद हो चुकी है, क्योंकि लोग ऑनलाइन सामान मंगवाने लगे हैं। टेलीकॉम और कैब सेवाओं के उदाहरण हमारे सामने हैं। कुछ साल पहले एक टेलीकॉम कंपनी ने मुफ्त डेटा और कॉल्स देकर सभी को आकर्षित किया, लेकिन आज वह बाजार की एकमात्र बड़ी खिलाड़ी है, और छोटी कंपनियां गायब हो चुकी हैं। यह पूंजी का खेल हमारे स्थानीय अर्थतंत्र को कमजोर कर रहा है।

तीसरा, तकनीक ने हमें सुविधा के नाम पर निर्भरता की ओर धकेल दिया है। हमारी नई पीढ़ी को पत्र लिखना, कतार में धैर्य रखना, या स्थानीय दुकानदारों से मोलभाव करना नहीं आता। मेरे पौत्र को, जो कॉलेज में है, यह नहीं पता कि डाकघर कैसे काम करता है, क्योंकि उसने कभी पत्र नहीं लिखा। यह निर्भरता हमें अपनी स्वायत्तता से वंचित कर रही है। तकनीक ने हमें इतना आलसी बना दिया है कि हम छोटे-छोटे कामों के लिए भी ऐप्स पर निर्भर हैं। एक बार मेरा इंटरनेट बंद हो गया, और मुझे एहसास हुआ कि मैं अपने बिजली बिल का भुगतान नहीं कर पा रहा था, क्योंकि मैंने कभी ऑफलाइन प्रक्रिया सीखी ही नहीं। यह निर्भरता हमें कमजोर बनाती है।

चौथा, तकनीक का मनोवैज्ञानिक प्रभाव भी गंभीर है। स्मार्टफोन और सोशल मीडिया ने हमें तुरंत संतुष्टि की आदत डाल दी है। हम अब इंतजार करना नहीं चाहते। पहले, किसी दोस्त को पत्र लिखकर उसका जवाब आने का इंतजार एक खूबसूरत अनुभव था। आज, अगर कोई व्हाट्सएप मैसेज का जवाब तुरंत नहीं देता, तो हम बेचैन हो जाते हैं। यह बेचैनी हमारी मानसिक शांति को प्रभावित करती है। बच्चे और युवा घंटों स्क्रीन पर बिताते हैं, जिससे उनकी एकाग्रता और रचनात्मकता पर असर पड़ रहा है। मेरे पड़ोस का एक बच्चा, जो पहले गलियों में क्रिकेट खेलता था, अब दिन-रात मोबाइल गेम्स में खोया रहता है। क्या यह प्रगति है?

तकनीक ने हमारा जीवन सुगम बनाया है, इसमें कोई शक नहीं। लेकिन इस सुगमता ने हमसे सामाजिकता, स्थानीय व्यवसाय, स्वायत्तता, और मानसिक शांति को छीन लिया है। हमें विचार करना होगा कि यह नया कितना स्वीकार्य है। क्या हम सुविधा के लिए अपनी सामाजिक और आर्थिक जड़ों को दांव पर लगा सकते हैं? क्या हम चाहेंगे कि हमारी आने वाली पीढ़ियां केवल स्क्रीन पर जीने वाली मशीनें बन जाएं? हमें यह तय करना होगा कि तकनीक को अपने जीवन का हिस्सा बनाना है या उसका ग़ुलाम बनना है। यह सवाल हमें भविष्य के लिए दिशा दे सकता है। हमें तकनीक का उपयोग करना चाहिए, लेकिन इस तरह कि हम अपनी मानवीयता, सामाजिकता, और स्वतंत्रता को बनाए रखें। शायद यही संतुलन हमें सच्ची प्रगति की ओर ले जाएगा।

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल,
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

गाजा युद्ध के दो साल : तबाही, त्रासदी और भविष्य की चिंता

डॉ. सुरेंद्रसिंह शेखावत

7 अक्टूबर 2023 को हमास के इजरायल पर किए गए हमले ने विश्व को हिलाकर रख दिया। 1200 से अधिक निर्दोष इजरायली नागरिकों की हत्या और सैकड़ों को बंधक बनाए जाने की घटना ने अंतरराष्ट्रीय समुदाय को स्तब्ध कर दिया। इस हमले ने इजरायल को जवाबी कार्रवाई के लिए प्रेरित किया, जिसे शुरू में आतंकवाद के खिलाफ न्याय की लड़ाई के रूप में देखा गया। इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने इसे अमेरिका के 9/11 हमले के बाद अल-कायदा के खिलाफ 'वॉर ऑन टेरर' से जोड़ा, और हमास को पूरी तरह नष्ट करने का वादा किया। लेकिन यह वादा जल्द ही एक ऐसी त्रासदी में बदल गया, जिसने गाजा को मलबे के ढेर में तब्दील कर दिया। दो साल बाद, गाजा का आईना हमें मानवीय तबाही, टूटे वादों, और विश्व की चुप्पी की भयावह तस्वीर दिखाता है।

गाजा: मलबे का शहर

संयुक्त राष्ट्र (यूएन) की सैटेलाइट रिपोर्ट्स के अनुसार, गाजा की 80 प्रतिशत इमारतें अब खंडहर बन चुकी हैं। 90 प्रतिशत स्कूल ध्वस्त हो गए, 98.5 प्रतिशत खेत उजड़ गए, और गाजा पट्टी का 80 प्रतिशत हिस्सा सैन्य क्षेत्र में बदल गया है, जहाँ आम नागरिकों का प्रवेश वर्जित है। लगभग 62,000 फिलिस्तीनी मारे जा चुके हैं, जिनमें 19,000 बच्चे शामिल हैं। 40,000 से अधिक बच्चे अनाथ हो गए हैं। गाजा, जो कभी 23 लाख लोगों का जीवंत घर था, अब भुखमरी और बेघरता का शिकार है। राहत एजेंसियों का कहना है कि यह अब एक शहर नहीं, बल्कि जीवित बचे लोगों का कैंप मात्र है।

युद्ध ने गाजा के बुनियादी ढांचे को पूरी तरह तबाह कर दिया। यूएन के अनुमान के अनुसार, 4.5 लाख करोड़ रुपये का इन्फ्रास्ट्रक्चर नष्ट हो चुका है। 54 मिलियन टन से अधिक मलबा जमा है, जिसे साफ करने में कम से कम 10 साल और 1.2 लाख करोड़ रुपये की लागत आएगी। इजरायली सेना ने गाजा में एक किलोमीटर गहरा बफर जोन और चार सैन्य कॉरिडोर बनाए हैं, जिसके कारण गाजा का 80 प्रतिशत हिस्सा अब उनके नियंत्रण में है। आम नागरिकों की आवाजाही केवल 20 प्रतिशत क्षेत्र तक सीमित हो गई है। यह गाजा, जो कभी अपने बाजारों, समुद्र तटों, और सांस्कृतिक धरोहर के लिए जाना जाता था, अब अपनी पहचान खो चुका है।

शिक्षा और स्वास्थ्य का विनाश : -गाजा की शिक्षा और स्वास्थ्य व्यवस्था भी इस युद्ध की भेंट चढ़ गई। युद्ध से पहले गाजा में 850 स्कूल थे, जिनमें से 90 प्रतिशत अब बंद हैं। सभी 10 विश्वविद्यालय नष्ट हो चुके हैं, और 30,000 करोड़ रुपये का शैक्षिक ढांचा खाक में मिल गया। स्वास्थ्य क्षेत्र की स्थिति और भी भयावह है। गाजा में पहले 36 अस्पतालों में 3,412 बेड उपलब्ध थे, लेकिन अब 94 प्रतिशत अस्पताल क्षतिग्रस्त हैं, और आधे से अधिक पूरी तरह बंद हैं। 40,000 करोड़ रुपये का स्वास्थ्य ढांचा नष्ट हो चुका है। बिजली, पानी, और दवाओं की कमी ने अस्पतालों को अंधेरे में डुबो दिया है। मरीज बिना इलाज के तड़प रहे हैं, और चिकित्सक बुनियादी उपकरणों के अभाव में असहाय हैं।

गाजा की 23 लाख आबादी में से 90 प्रतिशत लोग बेघर हो चुके हैं। लाखों लोग राहत कैंपों में बिना पानी, बिजली, और भोजन के जी रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र फूड एंड एग्रीकल्चर ऑर्गनाइजेशन की रिपोर्ट के अनुसार, गाजा की 98.5 प्रतिशत कृषि भूमि उजड़ चुकी है। 15,000 हेक्टेयर में से केवल 232 हेक्टेयर खेती के लिए बचे हैं। इजरायली हवाई हमलों में प्रयुक्त विस्फोटकों ने मिट्टी में रासायनिक प्रदूषण को तीन गुना बढ़ा दिया है। इस मिट्टी को फिर से उपजाऊ बनाने में 25 साल लग सकते हैं। कभी उपजाऊ रही यह धरती अब बंजर हो चुकी है, जिसने गाजा की खाद्य सुरक्षा को पूरी तरह नष्ट कर दिया।

युद्ध का मानवीय संकट :-यह युद्ध केवल सैन्य कार्रवाइयों तक सीमित नहीं रहा; यह मानवता के खिलाफ एक त्रासदी बन गया। गाजा की सघन आबादी वाले इलाकों में इजरायली बमबारी ने पूरे परिवारों को मिटा दिया। अस्पतालों में ईंधन की कमी के कारण नवजात शिशुओं की जान गई, राहत काफिलों को सीमाओं पर रोका गया, और शरणार्थी मलबे के बीच नंगे पाँव भटकने को मजबूर हुए। यह दृश्य इतना भयावह है कि यह संयुक्त राष्ट्र जैसे अंतरराष्ट्रीय संगठनों की प्रभावशीलता पर सवाल उठाता है। इजरायल ने हमास को नष्ट करने का दावा किया, लेकिन इस प्रक्रिया में गाजा की जनता को अभूतपूर्व पीड़ा दी। हमास ने इस तबाही को अपने पक्ष में इस्तेमाल करते हुए खुद को पीड़ितों का नायक साबित करने की कोशिश की। दोनों पक्षों के दावों के बीच, आम नागरिक ही कुचले गए। यह युद्ध न केवल रॉकेटों और बमों का था, बल्कि यह विश्वास, आशा, और मानवता को कुचलने का प्रतीक बन गया।

असफल युद्धिवराम और ट्रंप की योजना :-पिछले दो वर्षों में मिस्त्र, कतर, और अमेरिका की मध्यस्थता में सात बार युद्धिवराम के प्रयास हुए, लेकिन सभी विफल रहे। अब डोनाल्ड ट्रंप की "20-सूत्रीय गाजा शांति योजना" ने कुछ उम्मीद जगाई है। इस योजना में गाजा को 20 आधुनिक शहरी केंद्रों में विभाजित करने, बुनियादी ढांचे, आवास, स्वास्थ्य, और शिक्षा सुविधाओं के पुनर्निर्माण का प्रस्ताव है। इजरायली उद्योगपति एलियाजेरा फेल्डमैन की इस योजना का लक्ष्य गाजा को सिंगापुर जैसा आधुनिक क्षेत्र बनाना है। यह योजना बंधकों की रिहाई, पूर्ण युद्ध समाप्ति, गाजा के निशस्त्रीकरण, और अंतरिम अंतरराष्ट्रीय प्रशासन के माध्यम से पुनर्निर्माण की बात करती है।

हालांकि, इस योजना की आलोचना भी हो रही है। हमास और फिलिस्तीनी प्राधिकरण ने इसे 'जातीय सफाई' का प्रयास बताया है, जबकि मानवाधिकार संगठन इसे गाजा की संप्रभुता को कुचलने वाला मानते हैं। योजना में हमास को जानबूझकर बाहर रखा गया है, जो एक जटिल सामाजिक-राजनीतिक नेटवर्क है और आसानी से हाशिए पर नहीं जाएगा। यह योजना गाजा के मानवीय संकट को एक कॉर्पोरेट प्रोजेक्ट में बदलने का जोखिम उठाती है, जो टू-स्टेट समाधान को कमजोर कर सकती है। बिना फिलिस्तीनी स्वामित्व और भागीदारी के, यह योजना उपनिवेशवाद का रूप ले सकती है, जो दीर्घकालिक शांति के बजाय नए तनाव पैदा करेगी।

विश्व की चुप्पी और भविष्य की चुनौतियाँ :-गाजा की त्रासदी में विश्व समुदाय की चुप्पी सबसे बड़ा अपराध है। हमने स्क्रीनों पर देखा-घर गिरते, बच्चे भूख से मरते, और शहर धूल में बदलते। लेकिन कार्रवाई? संयुक्त राष्ट्र के प्रस्ताव अधर में लटके, सहायता काफिले रोके गए, और मानवाधिकारों की बातें केवल कागजों तक सीमित रहीं। ट्रंप की योजना एक अवसर हो सकती है, लेकिन यह तभी सार्थक होगी जब इसमें फिलिस्तीनियों को निर्णय लेने का अधिकार मिले। बिना उनके स्वामित्व के, यह योजना केवल राजनीतिक लाभ का साधन बनकर रह जाएगी। दो साल बाद, गाजा का आईना हमें एक कड़वी सच्चाई दिखाता है: युद्ध कभी भी उस तरह खत्म नहीं होते, जैसा उनके कर्ता चाहते हैं। यह इजरायल की हार है, जिसने अपनी सुरक्षा के नाम पर एक मानवीय त्रासदी को जन्म दिया। यह हमास की हार है, जिसने अपने लोगों को युद्ध की आग में झोंक दिया। और यह विश्व समुदाय की हार है, जो चुपचाप यह सब देखता रहा। अब सवाल यह है कि क्या हम फिर वही गलतियाँ दोहराएँगे? या गाजा को एक नई शुरुआत देंगे-न्याय, समानता, और मानवता के साथ । शांति की राह लंबी और कठिन है, लेकिन अगर हम इसे नहीं चुनते, तो इतिहास हमें माफ नहीं करेगा।

– डॉ. सुरेंद्रसिंह शेखावत,
बीकानेर, (लेखक राजनीतिक कार्यकर्ता और स्वतंत्र टिप्पणीकार है।)

बुढ़ापे की लाठी: भारत के वरिष्ठ नागरिकों को क्या मिलता है और उन्हें क्या मिलना चाहिए

अशोक कुमार

अंतर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस 2025, 1 अक्टूबर 2025 को मनाया जाएगा। यह दिन संयुक्त राष्ट्र द्वारा समाज में वृद्ध लोगों के योगदान को स्वीकार करने और वृद्धजनों को प्रभावित करने वाले मुद्दों पर जागरूकता फैलाने के लिए हर साल मनाया जाता है। अंतर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस के अवसर पर, भारत सरकार और विभिन्न राज्य सरकारें वरिष्ठ नागरिकों के लिए विशेष कार्यक्रमों का आयोजन करती हैं और उनकी कल्याणकारी योजनाओं को प्रमुखता से उजागर करती हैं।

यह दिन कोई नई सुविधाएँ शुरू करने का दिन नहीं है, बल्कि मौजूदा सुविधाओं और अधिकारों के बारे में जागरूकता बढ़ाने का एक मंच है। 2025 में भी, सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय तथा अन्य संगठन इसी दिशा में कार्य करेंगे। भारतवर्ष में वृद्धजनों (वरिष्ठ नागरिकों) के लिए सरकार द्वारा कई स्तरों पर सुविधाएं और कल्याणकारी योजनाएं चलाई जाती हैं, लेकिन वैश्विक मानकों और बढ़ती जरूरतों को देखते हुए, सुधार और नई पहल की गुंजाइश हमेशा बनी रहती है।

. भारत में वर्तमान में वृद्धजनों को दी जाने वाली प्रमुख सुविधाएँ

वरिष्ठ नागरिकों को सशक्त बनाने और उन्हें सुरक्षा प्रदान करने के लिए केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा निम्नलिखित प्रमुख सुविधाएँ दी जाती हैं:–

क्षेत्र वर्तमान सुविधाएँ और योजनाएँ

वित्तीय सुरक्षा

1. वरिष्ठ नागरिक बचत योजना (एएएए): बैंक और डाकघरों में जमा पर सामान्य से अधिक ब्याज दर। ।

2. प्रधानमंत्री वय वंदना योजना : 60ट्ट के लिए एक पेंशन सह बीमा योजना।

3. आयकर में छूट: 60 से 80 वर्ष के लिए उच्च कर छूट सीमा, और 80 वर्ष से अधिक के लिए उच्चतम छूट सीमा।

4. अटल पेंशन योजना: असंगठित क्षेत्र के लिए मासिक पेंशन की गारंटी।

सामाजिक सुरक्षा योजना

1. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय वृद्धावस्था पेंशन योजना : गरीबी रेखा से नीचे के 60 वर्ष से अधिक आयु वालों को मासिक पेंशन।

2. अन्नपूर्णा योजना: उन बेसहारा वरिष्ठ नागरिकों को 10 किलो मुफ्त खाद्यान्न जो किसी पेंशन योजना में शामिल नहीं हैं।

3. वृद्धाश्रम/डे केयर सेंटर: उ्रेद्ध को एकीकृत कार्यक्रम के तहत वित्तीय सहायता प्रदान करना।

स्वास्थ्य एवं देखभाल

1. आयुष्मान भारत योजना: 70 वर्ष से अधिक उम्र के सभी वरिष्ठ नागरिकों (गरीब-अमीर सभी) के लिए 5 लाख तक का मुफ्त स्वास्थ्य बीमा (यह योजना 2024 में घोषित हुई थी)।

2. जरा चिकित्सा विभाग (र्ंर्ंूंग्म्र्णं): सरकारी अस्पतालों में जरा चिकित्सा (बुजुर्गों के विशेष स्वास्थ्य देखभाल) विभाग स्थापित करने के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम।

3. प्राथमिकता: अस्पताल और डिस्पेंसरी में अलग कतार और प्राथमिकता के आधार पर इलाज।

कानूनी सुरक्षा

1. माता-पिता और वरिष्ठ नागरिकों का भरण-पोषण और कल्याण अधिनियम, 2007: यह कानून बच्चों को माता-पिता की देखभाल करने के लिए कानूनी रूप से बाध्य करता है।

2. वरिष्ठ नागरिक हेल्पलाइन : दुर्व्यवहार या सहायता के लिए टोल-फ्री राष्ट्रीय हेल्पलाइन (14567)।

यात्रा एवं आवागमन

1. रेलवे: आरक्षण में लोअर बर्थ का कोटा, प्राथमिकता बुकिंग और व्हीलचेयर सहायता। (कोविड के बाद अधिकांश रियायती किराए निलंबित हैं)।

2. हवाई यात्रा: एयर इंडिया द्वारा मूल किराए पर रियायत (60ट्ट आयु)।

3. बैंक/डाकघर: वरिष्ठ नागरिकों के लिए अलग काउंटर और प्राथमिकता सेवा।

आवश्यक और अपेक्षित सुविधाएँ जो दी जानी चाहिए

भारत में वृद्धजनों की बढ़ती आबादी और उनकी विशिष्ट चुनौतियों को देखते हुए, निम्नलिखित अतिरिक्त सुविधाओं और नीतिगत सुधारों की आवश्यकता है:

आवश्यक क्षेत्र , अपेक्षित सुविधाएँ (सुधार के लिए सुझाव)

1. आय और वित्तीय सुरक्षा

यूनिवर्सल पेंशन: सभी गरीब और जरूरतमंद वृद्धजनों के लिए न्यूनतम सम्मानजनक मासिक पेंशन (जैसे 3000-5000), जो महंगाई दर से जुड़ी हो। वर्तमान पेंशन राशि बहुत कम है। विश्वविद्यालयों के वित्तीय मॉडल की समीक्षा की जाए और फीस, अनुदान तथा स्वायत्त आय के बीच संतुलन स्थापित किया जाए ताकि वे केवल पेंशन के लिए सरकार पर पूरी तरह निर्भर न रहें।

स्वास्थ्य एवं दीर्घकालिक देखभाल ।

1. दीर्घकालिक देखभाल बीमा: वृद्धावस्था में लगने वाली दीर्घकालिक देखभाल (जैसे नर्सिंग होम, सहायक देखभाल) के लिए विशेष सरकारी बीमा योजना की शुरुआत करना।

2. जरा-चिकित्सा विशेषज्ञों की उपलब्धता: प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों (इ्ण) और सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों (ण्ण) तक जरा-चिकित्सा विशेषज्ञों और प्रशिक्षित नर्सों की अनिवार्य उपलब्धता सुनिश्चित करना। ।

3. घर पर स्वास्थ्य सेवा (प्दस पैंूर्म्मे): गंभीर रूप से बीमार या बिस्तर पर पड़े बुजुर्गों के लिए रियायती दरों पर सरकारी होम हेल्थकेयर सेवाओं की शुरुआत करना।

सामाजिक समावेशन एवं सुरक्षा

1. डिजिटल साक्षरता और सहायता: बैंक, सरकारी सेवाओं और स्वास्थ्य सेवाओं के लिए डिजिटल पहुँच में वृद्धजनों की सहायता हेतु हर क्षेत्र में समर्पित सहायता केंद्र स्थापित करना।

2. एज-फ्रेंडली शहर ॅ्ा-इगहत्ब ण्ूगे): सार्वजनिक परिवहन, पैदल मार्ग, पार्क और सार्वजनिक शौचालयों को वृद्धजनों की शारीरिक जरूरतों के अनुरूप बाधा-मुक्त बनाना (ॅम्म्ेंग्त)।

3. वृद्धजन कार्य ब्यूरो (स्ैंज्दब्सहू ॅंर्लेंल): 60ट्ट के लिए उनके कौशल और अनुभव के आधार पर लचीले, अंशकालिक (ईू-ऊग्स) रोजगार के अवसर प्रदान करने हेतु एक राष्ट्रीय मंच या ब्यूरो बनाना।

कानूनी क्रियान्वयन . भरण-पोषण अधिनियम का सख्त कार्यान्वयन: भरण-पोषण अधिनियम, 2007 के तहत मामलों के त्वरित निपटान के लिए विशेष ट्रिब्यूनल और प्रक्रियाओं को और अधिक प्रभावी बनाना।

इन अतिरिक्त और सुधारित सुविधाओं को प्रदान करके, भारत अपने वृद्धजनों के प्रति अपनी संवैधानिक प्रतिबद्धता को मजबूत कर सकता है और उन्हें सम्मान, सुरक्षा और सक्रिय भागीदारी वाला जीवन सुनिश्चित कर सकता है।

–अशोक कुमार,
पूर्व कुलपति, कानपुर एवं गोरखपुर विश्वविद्यालय; पूर्व विभागाध्यक्ष, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

ग्रामीण सेवा शिविर लोगों के लिये वरदान बना

शिविर में ग्रामवासियों को विभिन्न विभागों से जुड़ी योजनाओं का लाभ मिला

रतनगढ़, (निसं)। पंचायत समिति क्षेत्र की ग्राम पंचायत मेंलूसर में 11 अक्टूबर को आयोजित ग्रामीण सेवा शिविर-2025 ग्रामीणों के लिए उम्मीद और राहत का संदेश लेकर आया। शिविर में बड़ी संख्या में ग्रामीणों ने पहुँचकर विभिन्न विभागों से जुड़ी योजनाओं का लाभ उठाया।

ग्राम विकास अधिकारी वीरेंद्र सिंह कर्णावत ने शिविर को संबोधित करते हुए कहा कि राज्य सरकार की यह पहल ग्रामीणों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने वाली है। अब किसी भी लाभार्थी को दफ्तरों के चक्कर लगाने की जरूरत नहीं है। सभी विभाग एक ही स्थान पर उपलब्ध हैं, जिससे पारदर्शिता और सुविधा दोनों सुनिश्चित होती हैं। मुख्यमंत्री की इस योजना से कोई भी पात्र व्यक्ति अब सरकारी लाभ से वंचित नहीं रहेगा। शिविर में लाभार्थी शुभदान पुत्र भेंरूदान चारण ने प्रसन्नता जताते हुए कहा पहले छोटे-छोटे काम के लिए महीनों दफ्तरों के चक्कर काटने पड़ते थे, लेकिन इस शिविर में मेरा पट्टा सरलता से बन गया। अधिकारियों और कर्मचारियों ने पूरा सहयोग किया, जिससे कार्य आसानी से निपट गया। अन्य ग्रामीणों ने भी सरकार और प्रशासन की इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि शिविरों के जरिए अब योजनाओं की जानकारी और लाभ सीधे गाँव-गाँव तक पहुँच रहा है। इस अवसर पर तहसीलदार पूजा पारीक, प्रसारक प्रगति प्रसार अधिकारी संजय पारीक, प्रशासक सुनीता कंवर राठौड़, सरपंच प्रतिनिधि महावीर सिंह राठौड़, प्रभु सिंह, युवा नेता कल्याणसिंह सहित कई अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित रहे।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 13 अक्टूबर, 2025

कार्तिक मास, कृष्ण पक्ष, सप्तमी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2082, आर्द्रा नक्षत्र दिन 12:27 तक, परिद्य योग प्रातः 8:10 तक, बव करण दिन 12:15 तक, चन्द्रमा आज मिथुन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कन्या, चन्द्रमा-मिथुन, मंगल-तुला, बुध-तुला, गुरू-मिथुन, शुक्र-कन्या, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज रवियोग दिन 12:27 तक है। आज कालाष्टमी, अहोई अष्टमी है। आज अरुणोदय काल में मथुरा के राधा कुण्ड में स्नान है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 7:53 तक, शुभ 9:21 से 10:47 तक, चर 1:39 से 3:05 तक, लाभ अमृत 3:05 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 6:29, सूर्यास्त 5:57

मेष
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले ब मित्रों/रिश्तेदारों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक यात्रा संभव है। अनावश्यक धन खर्च होगा।

वृष
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

मिथुन
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनःस्थिति में सुधार होगा। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। आज धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

सिंह
आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बना रहेगा। संभावित धन प्राप्त होगा। आर्थिक मामलों में परिचितों से सहयोग मिल सकता है। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

तुला
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

वृश्चिक
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है।

धनु
परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज आपसी सहयोग से वर्तम